Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 12, Issue 2 | November 2024 - April 2025 | pp. 28-32

बुराइयों के प्रतिकार में गाँधी जी के अहिंसा सिद्धांत की भूमिका

डॉ. सुनीता गोयल

सह आचार्य, राजनीति विज्ञान
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

शोध सारांश

अहिंसा महात्मा गाँधी के विचारों का मूलाधार है। महात्मा गाँधी का अहिंसा सिद्धांत न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आध्यात्मिक और नैतिक आधार था, बल्कि यह आज के सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का प्रभावी साधन भी है। यह शोध पत्र गाँधीजी के अहिंसा सिद्धांत की भूमिका को बुराइयों के प्रतिकार के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करता है। गाँधीजी ने अहिंसा को केवल एक नकारात्मक अवधारणा नहीं माना, बल्कि यह एक सक्रिय और आत्मिक शक्ति है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी आंतरिक बुराइयों जैसे ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और लालच पर विजय पा सकता है। साथ ही, यह सिद्धांत समाज में व्याप्त असमानता, अस्पृश्यता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद और नस्लीय भेदभाव जैसी बाह्य बुराइयों से निपटने का भी मार्ग प्रस्तुत करता है। शोध में दर्शाया गया है कि अहिंसा कायरता नहीं, बल्कि साहस, आत्मबल और नैतिक दृढ़ता की मांग करती है। गाँधीजी का मानना था कि अहिंसा का पालन वीर व्यक्ति ही कर सकते हैं। राजनीति में भी अहिंसा की भूमिका को रेखांकित किया गया है, जहां इसे सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और शासन की मर्यादा बनाए रखने का मूल आधार माना गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं द्वारा अहिंसा की प्रभावशीलता को सिद्ध किया गया है। शोध का निष्कर्ष है कि आज की अस्थिर और हिंसक विश्व व्यवस्था में गाँधीजी का अहिंसा सिद्धांत ही स्थायी शांति, सहिष्णुता और सामाजिक समरसता की दिशा में सार्थक समाधान प्रदान कर सकता है।

संकेताक्षर—*अहिंसा, बुराइयाँ, प्रतिकार, समाधान, शक्तिशाली*

प्रस्तावना

मार्टिन लूथर ने कहा था कि अगर मानवता की प्रगति करनी है तो गाँधी अपरिहार्य है। उन्होंने शांति और सद्भाव की दुनिया विकसित करने की ओर प्रेरित किया।

गाँधी एक महान योद्धा, महान योगी, धार्मिक व्यक्ति, एक दार्शनिक, एक राजनीतिज्ञ के साथ बहुत कुछ थे। अहिंसा महात्मा गाँधी के वैचारिक दर्शन का मूलाधार है। अहिंसा कायरता का मंत्र नहीं बल्कि सबलता का शक्तिशाली शस्त्र है। गाँधी जी के लिए अहिंसा—कार्य करने की एक पद्धति और हृदय परिवर्तन का साधन है। अहिंसा एक आत्मिक शक्ति हैं। अहिंसा का अर्थ है—नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति से बुराई का सामना करना। घोर से घोर हिंसा का मुकाबला करने में भी अहिंसा सक्षम है। अहिंसा का तात्पर्य समस्त जीवों के प्रति दुर्भावना का पूर्ण तिरोहित भाव और सद्भावना का प्रसार है।[1] हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं करती। समस्या का हल समस्या पैदा कर नहीं बल्कि समाधान ढूंढ कर ही किया जा सकता है।

अहिंसा का अर्थ स्पष्ट करते हुए महात्मा गाँधी ने लिखा है कि केवल शारीरिक चोट ना पहुंचाना ही अहिंसा नहीं है। गाँधी जी के अनुसार किसी को परेशान करना किसी की प्रत्यक्ष हत्या करने से भी बुरा कार्य है। किसी को परेशान करना हिंसक कार्य है। गाँधी जी ने अहिंसा के अर्थ को केवल गैर हत्या और गैर को चोट न पहुंचाने की जगह उसे व्यापक अर्थ में

परिभाषित किया है। अहिंसा का अर्थ है किसी बुरे चिंतन या बुरे विचार से भी किसी को चोट ना पहुँचे। झूठ नहीं बोलना किसी की निंदा नहीं करना। किसी के प्रति बुरे विचार मन में रखना और वस्तुओं का परिग्रह करना जिनकी विश्व को आवश्यकता है, हिंसा है। गाँधी जी चाहते थे कि अधिक से अधिक लोग अहिंसा को केवल एक अमूर्त अवधारणा के रूप में स्वीकार नहीं करें अपितु एक व्यावहारिक और अधिकतम क्षेत्र में प्रयोग होने वाले साधन के रूप में समझें। विशेष रूप से सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन में अहिंसा की सफलता को स्थापित करें। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा समाज से विमुक्त होकर नहीं बल्कि समाज में रहकर समाज को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा देती है। अहिंसा का पालन वीर व्यक्ति ही कर सकते हैं। जिन व्यक्तियों में सत्यता, आंतरिक पवित्रता, व्रत पालन, निर्भीकता और त्याग की भावना है, ऐसे व्यक्ति ही अहिंसा का पालन कर हर प्रकार की बुराइयों का समाधान कर सकते है। ऊंची से ऊंची बुराई का समाधान ऊंची से ऊंची अहिंसा के माध्यम से संभव है।

अहिंसा से आंतरिक बुराइयों पर विजय : गाँधी जी की अहिंसा व्यापक अर्थ लिए हुए हैं। अहिंसा को सकारात्मक अर्थ में ग्रहण करने से अहिंसा में लगभग सभी नैतिक सद्गुणों को समावेश हो जाता है। जैसे नम्रता, क्षमा, उदारता, अपरिग्रह, सरलता, निःस्वार्थता। अहिंसा के विस्तृत अर्थ को व्यक्ति जब धारण करता है तो उसकी बुराइयाँ स्वतः ही बाहर निकल जाती है। जब शुभ भावना, शुभकामना एवं सद्भावना प्रवाहित होती है तो ईर्ष्या, द्वेष, छल कपट, नफरत की बुराइयाँ स्वत ही किनारे लग जाती हैं। व्यक्ति अपनी आंतरिक बुराइयों पर विजय प्राप्त कर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होता है। इससे मानसिक रूप से भी वह शक्तिशाली बनता है और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। अहिंसा के विस्तृत अर्थ को प्रस्थापित करने के साथ ही गाँधीजी ने हिंसा का भी विस्तृत अर्थ में प्रयोग किया है, षड्यंत्र, धोखेबाजी, ट्रिक, असत्य, अनुचित कार्य को हिंसा में शामिल किया है। व्यक्ति अपने मन से अगर ऐसी हिंसा का परित्याग करें तो अपनी बुराइयों पर विजय प्राप्त कर सकता है। महात्मा गाँधी के अनुसार किसी के प्रति घृणा की भावना को बनाए रखना किसी को नुकसान पहुंचाना थी एक प्रकार की हिंसा है। अहिंसा का अर्थ प्रेम का समुद्र, वैर का सर्वथा त्याग। अहिंसा में दीनता कायरता नहीं होती अहिंसा कायरता का कवच नहीं है। डरकर भागना भी नहीं है। अत्याचार के सामने सर झुकाना भी अहिंसा नहीं है। अहिंसा में दृढ़ता वीरता निश्चलता होनी चाहिए। गाँधी जी की अहिंसा एक गत्यात्मक अवधारणा है ना कि स्थिर अवधारणा। अहिंसा एक ऐसी सशक्त शक्ति है जो व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डालती है। महात्मा गाँधी कहते थे मेरा पथ ईश्वर की सेवा है और इसलिए मानवता की सेवा है। सेवा का अर्थ है शुद्ध प्रेम। दूसरों को बदलने के लिए आपको पहले स्वयं बदलना होगा स्वयं में दूसरों के प्रति प्रेम पैदा करना होगा। आज व्यक्ति की समस्या का मूल कारण व दूसरों को बदलने की कोशिश करता है, स्वयं नहीं बदलता। उपरोक्त विचारों को अपना कर व्यक्ति स्वयं बदल जाता है तो वह समस्या स्वरूप न रहकर समाधान स्वरूप बन जाता है।

अहिंसा का पाठ अपरिग्रह का पाठ है। लोभ लालच की प्रवृत्तियों पर गाँधी जी के अपरिग्रह सिद्धांत से विजय प्राप्त की जा सकती। गाँधीजी आम व्यक्ति की दुर्दशा से बहुत चिंतित थे उन्होंने कहा अहिंसा के माध्यम से वर्तमान स्थिति को बदलना होगा।[2] ताकि गरीब व्यक्ति भी सम्मान के साथ सर उठा सके। इसके लिए नफरत के स्थान पर प्रेम का बर्ताव किया जाए लालच को प्यार में बदले और इनका पालन सच्ची भावना के साथ किया जाए तो आपसी समरसता का माहौल बनेगा। हमारे मन में क्रोध और घृणा छा जाती हैं तभी व्यक्ति हिंसक कार्य के लिए उतारू होता है। गाँधी जी ने इस विनाशकारी प्रवृत्ति को दूर करने का सूत्र दिया कि मस्तिष्क में अहिंसा का भाव उत्पन्न किया जाए। महात्मा गाँधी ने कहा अहिंसा से बढ़ कर कोई हथियार नहीं। जिसे दृढ़ विश्वास के साथ साहस के साथ संभाला जाए तो हर समस्या का समाधान संभव है। आवश्यकता है हमें अपने साथियों से प्रेम करने की कला और जीवन जीने की कला भी सीखनी चाहिए। अहिंसा में समग्र विकास समाया हुआ है। आत्म बल शारीरिक बल से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है। बाह्य कोलाहल से आक्रांत लोग आंतरिक शांति हासिल करने के उद्देश्य से तरह-तरह के उपाय करते हैं। अंदर की शांति से ही बाहर की शांति आएगी। अंदर की शांति तभी आएगी जब आप बाहर की दुनिया से अपने आपको अप्रभावित रखेंगे। अहिंसा के व्यापक अर्थ में आप किसी से नाराज नहीं हो सकते आप उस व्यक्ति के प्रति

भी जो आपको अपना दुश्मन समझता है बुरे विचार नहीं रख सकते। दुश्मन के प्रति प्रेम भावना दुश्मन के हृदय को भी परिवर्तन कर देती हैं। भय मिटता है निर्भरता से, क्रोध मिटता है अक्रोध से, असत्य मिटता है सत्य से। दुश्मनी मिटती है प्रेम से। यही महात्मा गाँधी का अहिंसा दर्शन जिसके सामने आज सारा संसार नतमस्तक है।

समाज की बाह्य बुराइयों के प्रतिकार के संदर्भ में

आज समाज में फैली असत्यता, अवसरवादिता, धोखेबाजी, चालाकी, लालच, स्वार्थपरता जैसी संकीर्ण भावनाओं के स्थान पर सामाजिक सहिष्णुता प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को अहिंसा के आधार पर ही स्थापित किया जा सकता है।

अहिंसक प्रतिरोध के अग्रणी प्रोफेसर अपने प्रकाशन "पॉलिटिक्स ऑफ़ नॉन वायलेंस एक्शन' में निम्नलिखित परिभाषा का उपयोग करते हैं—अहिंसक कार्यवाही एक ऐसी तकनीक है जिसके द्वारा जो लोग निष्क्रियता और समर्पण को अस्वीकार करते हैं और जो संघर्ष को आवश्यक मानते हैं वह हिंसा के बिना अपना संघर्ष लड़ सकते हैं। अहिंसक कार्यवाही संघर्ष से बचने या अनदेखा करने का प्रयास नहीं है। यह इस समस्या की प्रतिक्रिया है कि कैसे राजनीति में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए विशेष रूप से शक्तियों का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे करें। समाज में फैले हुए झूठ और अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। इस लड़ाई में सत्याग्रह जो अहिंसा पर आधारित है महत्वपूर्ण हथियार है।[3] प्रतिशोध की भावना के बिना, आक्रामक हुए बगैर अहिंसा के रास्ते चलकर सत्य को सामने रखकर अहिंसक व्यक्ति अहिंसक समाज अपने लक्ष्य में कामयाब हो सकता है। इसके लिए शत्रु या प्रतिपक्ष की चेतना को जाग्रत करना आवश्यक है। आत्म बल शारीरिक बल से अधिक शक्तिशाली होता है। महात्मा गाँधी कहते हैं जब निहत्थी जनता हथियारों से लैस पुलिस के सामने अपनी उचित मांगों को लेकर आगे बढ़ती है। तब बड़े ते बड़ा साम्राज्य भी झुक जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि अहिंसा द्वारा उत्पन्न बल हिंसा से बेहतर है। अहिंसा का अर्थ गाँधीजी के लिए शक्तिहीन होना नहीं है। केवल हिंसा पर आधारित शक्ति का त्याग करना है। क्योंकि अहिंसा से उत्पन्न होने वाली शक्ति सर्वोपरि है। और इस शक्ति के बल पर आप समाज में फैली हुई सभी बुराइयाँ जैसे भ्रष्टाचार, असमानता, लालच, ऊँच-नीच की भावना, गरीबी इन सब का समाधान कर सकते हैं। गाँधी जी चाहते थे की अधिक से अधिक लोग अहिंसा को केवल एक अमूर्त अवधारणा के रूप में स्वीकार नहीं करें अपितु एक व्यावहारिक और अधिकतम क्षेत्र में प्रयोग होने वाले साधन के रूप में समझे विशेष रूप से सामाजिक राजनीतिक परिवर्तन में अहिंसा की सफलता को स्थापित करें क्योंकि अहिंसा में दुनिया की हर समस्या का समाधान है।

अहिंसा के माध्यम से बाह्य बुराइयों का समाधान

अहिंसा के माध्यम से समाज में फैली हुई बुराइयों का भी समाधान किया जा सकता है। क्योंकि अहिंसक मार्ग पर चलता हुआ व्यक्ति सच्चाई नम्रता सहनशीलता प्रेम सहयोग सम्मान सद्भावना दया को विकसित करता है। और जब समाज में इस प्रकार के भाव प्रदर्शित होते हैं। तो सामाजिक बुराइयों का निवारण हो जाता है। महात्मा गाँधी ने स्वयं भी समाज में फैली बुराइयों को खत्म करने के लिए अहिंसक मार्ग अपना कर लोगों के सामने उदाहरण पेश किया था जैसे अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध, लालच का प्रतिकार के लिए ट्रस्टीसिप का सिद्धांत, शारीरिक श्रम की अनिवार्यता, समानता जैसे आंदोलन अहिंसा के ही रूप है जिसे समाज की बुराइयों का प्रतिकार किया जा सकता है। गाँधी जी के पास अहिंसा के अलावा और कोई हथियार नहीं था। अहिंसा के माध्यम से आत्मिक शक्ति जाग्रत हो जाती है तो व्यक्ति शक्तिशाली बन जाता है उस शक्ति के आगे बुराइयाँ धराशायी हो जाती है। देश में फैली हुई बुराइयों का समाधान अहिंसा के आधार पर ही संभव है। क्या हिंसा से कभी जीवन बेहतर हुआ है या कोई ऐसी जगह है जहां आपने सुना हो की शांति और सद्भावना से जीवन मुसीबत में पड़ा है। हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं करती समस्या का हल समस्या पैदा कर नहीं बल्कि समाधान ढूंढ कर ही किया जा सकता है। यदि राज्य में हिंसा का माहौल है समाज में हिंसा का माहौल है तो हिंसा का हिंसा के आधार पर समाधान नहीं हो सकता क्योंकि आग पर काबू पाने के लिए आग की नहीं पानी की आवश्यकता होती है। महात्मा गाँधी भी यही कहते हैं कि देश में समाज में हिंसक माहौल को नियंत्रण में लेने के लिए अहिंसा के आधार पर माहौल बनाया जाए तो समाज में शांति स्थायी रूप से हो सकती है। हिंसा स्थायी समाधान नहीं है क्योंकि हिंसा हमेशा प्रति हिंसा को जन्म देती है। आपको संघर्ष करने के लिए अन्याय के खिलाफ आवाज

उठाने के लिए उत्पीड़न से लड़ने के लिए शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं वरन इसमें प्रतिशोध की भावना के बिना आक्रामक हुए बगैर अहिंसा के रास्ते पर चलकर अपने लक्ष्य में कामयाब होने के लिए शत्रु पक्ष की चेतना को जाग्रत करना आवश्यक है। अहिंसक कार्यवाही के साथ-साथ विचार और शब्दों में भी अहिंसा होनी चाहिए तभी प्रतिद्वंद्वी पर स्थायी छाप छोड़ सकते हैं। अहिंसा में गर्व और अहंकार का भी कोई स्थान नहीं है अहिंसा में विनम्रता आवश्यक है। अहिंसा के स्वभाव में गलत तरीकों से अर्जित लाभ एवं अनैतिक कार्यों के लिए कोई स्थान नहीं है। यह एक ऐसी शक्ति है जिसका प्रयोग सभी लोग कर सकते हैं बच्चे, युवा, बुजुर्ग, महिलाएँ बशर्ते की उनमें सभी के प्रति प्रेम की भावना हो। सही तरीके से पालन की गई अहिंसा उसी प्रकार आत्मा का पोषण है जैसे भोजन शरीर का पोषण है। ऐसी अहिंसा से शक्तिशाली हुई आत्मा सामाजिक बुराइयों का प्रतिकार कर सकती है।

राजनीति में अहिंसा की महत्ता

राजनीति में अहिंसा की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए गाँधी जी ने कहा राजनीति मूलतः एक धार्मिक गतिविधि है। और अगर इसे धर्म से अलग कर दिया जाए तो यह एक मृत शरीर के रूप में रह जाएगी। जो केवल जलने योग्य है। रिचर्ड जॉनसन का मानना है कि गाँधीजी उन पहले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने आधुनिक सभ्यता में धर्मनिरपेक्ष राजनीति के स्थान पर अहिंसक राजनीति के सिद्धांत और व्यवहार को क्रियान्वित करने का प्रयास किया। गाँधीजी अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से राज्य की शक्ति कम करना चाहते थे। गाँधी जी ऐसे राज्य के हिमायती थे जहां हिंसा का बल प्रयोग का कोई स्थान ना हो। अहिंसा शक्तिशाली अस्त्र है हालांकि इसका परिणाम इसकी समझ और इसके उचित प्रयोग पर निर्भर करता है। कोई भी राष्ट्र जो सांप्रदायिकता तानाशाही भ्रष्टाचार और सत्ता के खेल से पीड़ित जैसी समस्याओं से ग्रसित है उन समस्याओं का समाधान भी अहिंसा के माध्यम से संभव है। अहिंसा को अपनाने से ही व्यक्तियों में सद्गुणों का विकास संभव होगा और समाज की अनेक प्रकार की बुराइयाँ खत्म होगी। महात्मा गाँधी ने कहा अहिंसा की सफलता असंदिग्ध है। ब्रिटिश शासन के खिलाफ महात्मा गाँधी ने सफलतम अहिंसक संघर्ष करके भारत को 1947 में आजादी दिलाई। अहिंसा के माध्यम से ब्रिटिश शासन की जंजीरों से हमें मुक्त कराया। ब्रिटिश शासन से तो हम मुक्त हो गए लेकिन भारत आजाद होने के बाद भ्रष्टाचार की जंजीरों में जकड़ गया। क्या भ्रष्टाचार की जंजीरों से हम अहिंसा के माध्यम से मुक्त नहीं हो सकते? महात्मा गाँधी के पद चिन्हों पर चलकर ही 5 अप्रैल 2011 को मध्य दिल्ली में अन्ना हजारे ने बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के दोषियों को दंडित करने के कांग्रेस के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के उदासीन प्रयासों का विरोध अहिंसा के आधार पर ही किया। अन्ना हजारे का मानना है कि भ्रष्टाचार के कारण हमारी आजादी खतरे में है और जब तक इसे खत्म नहीं किया जाता देश सही मायने में आजाद नहीं होगा। इसलिए भ्रष्टाचार के खिलाफ एक शांतिपूर्ण अहिंसक युद्ध छेड़ा। अन्ना हजारे को फिल्मी सितारों और शहरी मध्यम वर्ग ने साथ दिया। अन्ना हजारे का आंदोलन दिल्ली से बाहर भी अनेक क्षेत्रों में फैल गया। यह अहिंसा की ही ताकत थी कि 8 अप्रैल को सरकार लोकपाल विधेयक का मसौदा तैयार करने के लिए समिति गठित करने के लिए सहमत हुई। इसके बाद बाबा रामदेव ने भी भ्रष्टाचार के मुद्दे पर अहिंसक संघर्ष का रास्ता अपनाया। महात्मा गाँधी भारतीय प्रजातंत्र में भी अहिंसा के आधार पर परिवर्तन चाहते थे। उन्होंने लोकतंत्र के मूलाधार का समर्थन किया कहा कि शासन शासित के द्वारा नियंत्रित होना चाहिए शासन का धर्म शासन के दुख सुख में सम्मिलित होकर उनको अहिंसा के मार्ग पर अग्रसर करना होता है। भारतीय लोकतंत्र की बुराइयों का समाधान भी गाँधी की अहिंसा में निहित है। महात्मा गाँधी ने राजनीति में समाज में अहिंसा को महत्वपूर्ण आधार बनाया। अहिंसा का अर्थ ही होता है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण योगदान है अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस महात्मा गाँधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को मनाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखें तो अमेरिका में मार्टिन लूथर, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और म्यांमार में आन सान सु की ने अन्याय का मुकाबला करने के लिए गाँधी की अहिंसा को ही अपना शस्त्र बनाया और उसका सफल प्रयोग भी किया। अहिंसा के आधार पर ही विश्व शांति संभव है यह उन्होंने दिखा दिया। आज युद्ध की विभीषिका और विनाश की ज्वाला पर बैठी दुनिया के लिए महात्मा गाँधी की अहिंसा ही एकमात्र

उपाय है। सभी के प्रति शुभ भावना और प्रेम अहिंसा का मूल है। आतंकवाद नस्लीय भेद के प्रसार को रोकने में भी अहिंसा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अहिंसा के माध्यम से समझदारी पूर्ण दृष्टिकोण विकसित कर ऐसा माहौल बनाना है ताकि युद्ध की आतंकवाद की साम्राज्यवाद की स्थितियां पैदा ही नहीं हो और इस तरह का माहौल बने ही नहीं। अगर ऐसा माहौल बनता भी है तो उसका सामना अहिंसा के माध्यम से करना है। अहिंसा का अर्थ दुष्ट कर्ता के सम्मुख समर्पण नहीं बल्कि अहिंसा का अर्थ है गलत के विरोध में अपनी आत्मा की शक्ति लगाना ताकि प्रतिरोधी की आत्मा जाग्रत होती है। और यदि प्रतिरोधी की आत्मा जाग्रत होती है तो उसमें प्रेम, दया, सद्भावना, सहयोग की भावनाएँ भी जाग्रत हो जाती हैं। महात्मा गाँधी द्वारा दिया गया अहिंसा का सिद्धांत आज भी दमनकारी शासन को हटाने के लिए एक कारगर मॉडल है। मिस्र के लोगों ने भी दिखा दिया है कि अहिंसा के सिद्धांत अभी भी जीवित है और अहिंसा के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन किया जा सकता है। आज अहिंसा के सिद्धांत का प्रयोग विश्व में कई देश कर रहे हैं अहिंसा की कोई सीमा नहीं है अहिंसा कभी भी असफल नहीं होती है। वर्तमान समय में आतंकी हमले, क्षेत्रीय विवाद, परमाणु विभीषिका जैसी अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान अहिंसा के माध्यम से ही संभव है। अहिंसा के बिना मानवता का विनाश हो सकता है। अहिंसा शक्तिहीन की शक्ति ईश्वर की शक्ति है। गाँधी जी ने अहिंसा सिद्धांत का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रयोग किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसके शुभ परिणाम हमें देखने को मिलते हैं। अहिंसा के पथ पर चलकर अनेक नायकों ने अपने राष्ट्र की समस्याओं के समाधान की ओर कदम बढ़ाए हैं। भारत के अहिंसा सिद्धांत के लिए पूरा विश्व उसका ऋणी रहेगा।

निष्कर्ष

वर्तमान अस्थिरता के युग में जहां एक तरफ व्यक्ति मानसिक रूप से अशांत है। व्यक्ति में प्रेम, दया, करुणा, सहयोग की भावना की कमी नजर आ रही है। ऐसे समय में अहिंसा के माध्यम से व्यक्ति सद्गुणों से भरपूर होता है तो मानसिक रूप से भी दृढ़ होता है और छोटी-छोटी बातें उसको अशांत नहीं करती। सामाजिक स्तर पर भी अनेक प्रकार की समस्याओं का कारण व्यक्ति का स्वार्थ, आर्थिक प्रलोभन, लोभ, लालच की प्रवृत्ति, अवसरवाद, धोखा, चालाकी, स्वार्थपरता, संकीर्णता का समाधान अहिंसा के माध्यम से ही संभव है। अहिंसा के माध्यम से ही उच्च आदर्शों का प्रसार किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सम्मान की भावना सहयोग की भावना अहिंसा के माध्यम से ही विकसित की जा सकती है। विश्व शक्तियाँ जहां अस्त्र-शस्त्र एकत्रित करने में लगी हुई है। परमाणु युद्ध की आशंका छाई हुई है, एक-दूसरे के ऊपर अपनी शक्ति का आरोपित करने में महा शक्तियाँ लगी हुई है; अहिंसा के माध्यम से ही इस पर रोक लगाई जा सकती है। महात्मा गाँधी ने कहा था धर्म विहीन राजनीति मृत्यु जाल की तरह है। धर्म पर राजनीति का अस्तित्व समाज की बेहतरी के लिए ही होना चाहिए। अहिंसा के माध्यम से ही राजनीतिक आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्याकुल समाज एवं विश्व की कई समस्याओं का समाधान हो सकता है। विश्व जिन समस्याओं का हल हिंसा में ढूंढना चाहता है उसका हल अहिंसा में निहित है। आज पूरे विश्व को अहिंसा सिद्धांत की नितांत आवश्यकता है। मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समरसता, राजनीतिक शुचिता एवं विश्व शांति की पुनर्स्थापना के लिए अहिंसा का सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रभाकर, विष्णु, गाँधी समय समाज और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. कोचर, कन्हैयालाल लाल, गाँधी दर्शन, अनुपम प्रकाशन, जयपुर, 1997
3. ईश्वरन, एकनाथ, गाँधी द वन मैन चेंज्ड खुद टू चेंज द वर्ल्ड, नीलगिरी प्रेस, कैलिफोर्निया, 2011
4. धीरेंद्र, मोहन, महात्मा गाँधी का दर्शन, बिहारी हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1983
5. प्रभु, आर.के. राव, महात्मा गाँधी का मन, देसाई नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1996
6. गाँधी, एम.के., गाँधी के सुरबती ए, संपादक यंग इंडिया ए वीकली जर्नल, 1919
7. दाधीच, नरेश, महात्मा गाँधी का चिंतन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2014
8. जोशी, शंभू मिथिलेश, गाँधी दृष्टि विविध आयाम, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2020
9. स्टेगर, मैनफायर्ड, गाँधीज़ डिलेमा : नॉन वायलेन्स प्रिंसिपल एण्ड नेशनलिस्ट पावर, सेंट मार्टिन प्रेस, न्यूयार्क, 2000